पाठ 1.1 : जीवन नहीं मरा करता है

गोपाल दास 'नीरज'

पद्मश्री और पद्मभूषण सम्मान से विभूषित ***गोपालदास 'नीरज'*** *का जन्म 4 जनवरी 1925 को इटावा (उत्तर प्रदेश) के पुरावली ग्राम में हुआ था। हिंदी भाषा के प्रमुख गीतकार और कवि नीरज ने कविता के साथ–साथ हिंदी सिनेमा के लिए लोकप्रिय गीत लिखे हैं–* ***कारवाँ गुजर गया, बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ, ए भाई! जरा देख के चलो*** *आदि। जन सामान्य की दृष्टि में वे मानव प्रेम के अनन्य गायक हैं। उन्होंने अपनी मर्मस्पर्शी काव्यानुभूति तथा सहज, सरल भाषा द्वारा हिंदी कविता को आम जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।* ***कारवाँ गुजर गया, प्राण गीत, आसावरी, बादर बरस गयो, दो गीत, नदी किनारे, नीरज की गीतिकाएँ, संघर्ष, विभावरी, नीरज की पाती, लहर पुकारे, मुक्तक, गीत भी अगीत*** *आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।*

छिप–छिप अश्रु बहाने वालो !
मोती व्यर्थ लुटाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।

सपना क्या है? नयन सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी,
गीली उमर बनाने वालो!
डूबे बिना नहाने वालो!
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।
खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी

पहने सुबह धूप की धोती,
वस्त्र बदलकर आने वालो!
चाल बदलकर जाने वालो!
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

लाखों बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न आई पनघट पर,
लाखों बार कश्तियाँ डूबीं
चहल–पहल वो ही है तट पर,
तम की उमर बढ़ाने वालो!
लौ की आयु घटाने वालो!
लाख करे पतझर कोशिश पर
उपवन नहीं मरा करता है।

लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की,
तूफ़ानों तक ने छेड़ा पर
खिड़की बंद न हुई धूल की,
नफ़रत गले लगाने वालो !
सब पर धूल उड़ाने वालो !
कुछ मुखड़ों की नाराज़ी से दर्पण नहीं मरा करता है।

शब्दार्थ

नयन – आँख; **सेज** – बिस्तर, बिछावन; **अश्रु** – आँसू; **व्यर्थ** – अर्थहीन, अनावश्यक; **शिकन** – सिलवटें, सिकुड़न; **पनघट** – पानी भरने का घाट, वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हों।

अभ्यास

पाठ से

1. कविता में वे कौन–कौन सी पंक्तियाँ हैं जो हमारे अंदर आशा का संचार करती हैं?
2. 'मोती व्यर्थ लुटाने वालो!' पंक्ति में मोती से क्या आशय है?
3. 'तम की उमर बढ़ाने वालो! लौ की आयु घटाने वालो।' कविता की इन पंक्तियों में किस तरह के लोगों को संबोधित किया गया है और इनकी तुलना किससे की गई है?
4. ''लूट लिया माली ने उपवन, लुटी न लेकिन गंध फूल की'' कविता की इन पंक्तियों में कवि क्या संदेश देना चाह रहा है? अपने विचार लिखिए।
5. कविता के शीर्षक 'जीवन नहीं मरा करता' की उपयुक्तता पर अपने विचार लिखिए।

पाठ से आगे

1. कुछ सपनों के मर जाने से जीवन समाप्त नहीं हो जाता है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? अपने पक्ष में उदाहरण सहित तर्क दीजिए।
2. अपने या अपने आसपास के लोगों के जीवन की कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन कीजिए जिनके घटित होने पर भी जीवन के वृहद परिदृश्य प्रभावित नहीं होते।

AVHCXK

भाषा के बारे में

1. हिंदी भाषा में कई बार एक ही अर्थ के लिए एक से अधिक शब्द रूप इस्तेमाल किए जाते हैं, उदाहरण के लिए कविता में 'ज्यों' शब्द आया है, इसके लिए 'जैसे' शब्द का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इन्हें पर्यायवाची भी कहते हैं। निम्नांकित शब्दों के पर्यायवाची बताइए।

AVR8Z8

(क) अश्रु (ख) व्यर्थ (ग) नयन

(घ) चंद (ङ) कश्ती (च) तम

(छ) उपवन (ज) कोशिश

योग्यता विस्तार

1. गोपाल दास 'नीरज' के कुछ प्रसिद्ध गीतों को खोजकर पढ़िए और गाइए।
2. जीवन में आशा का संचार करने वाली रामधारी सिंह दिनकर की दी गई कविता को भी पढ़िए।

AW151V

यह प्रदीप जो दीख रहा है झिलमिल दूर नहीं है
थक कर बैठ गए क्या भाई! मंज़िल दूर नहीं है।
चिंगारी बन गई लहू की बूँद, गिरी जो पग से
चमक रहे पीछे मुड़ देखो चरण–चिह्न जगमग से।
शुरू हुई आराध्य भूमि यह क्लांत नहीं रे राही;
और नहीं तो पाँव लगे हैं क्यों पड़ने डगमग से।
बाकी होश तभी तक, जब तक जलता तूर नहीं है
थक कर बैठ गए क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।
अपनी हड्डी की मशाल से हृदय चीरते तम का,
सारी रात चले तुम, दुख झेलते कुलिश निर्मम का।
एक खेप है शेष, किसी विध पार उसे कर जाओ;
वह देखो, उस पार चमकता है मंदिर प्रियतम का।
आकर इतना पास फिरे, वह सच्चा शूर नहीं है;
थककर बैठ गए क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।
दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य–प्रकाश तुम्हारा,
लिखा जा चुका अनल–अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलाएगी ही,
अंबर पर घन बन छाएगा ही उच्छ्वास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है।
थककर बैठ गए क्या भाई! मंज़िल दूर नहीं है।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

आराध्य – जिनकी पूजा की जाती हो; **क्लांत** – थका हुआ; **तूर** – नाद, घोष; **कुलिश** – आकाशीय बिजली, गाज; **खेप** – उतनी वस्तु जो एक बार लादी, ढोई या पहुँचाई जा सके; **अनल** – अग्नि; **अंबर** – आकाश; **उच्छ्वास** – साँस छोड़ना।